डा. सुजाता गुप्ता

'अर्द्धनारीश्वर' शीर्षक पाठ का सारांश

सन् 1952 ई० में रामधारी दिनकर ने इस निबंध की रचना की है। यह एक ललित निबंध की श्रेणी में संकलित है। यह निबंध उनके 'अर्द्धनारीश्वर' (1952 ई०) निबंध-संग्रह से लिया गया है।

एक तरफ इस निबंध में विशिष्ट पद रचना की रीति है, तो दूसरी ओर चिंतन प्रवण सूत्र है। इसमें गद्यगीतात्मक रीतिवृत्त-पूर्ण व्याख्यान किया गया है। एक ओर मानवीकरण की प्रतीकात्मकता है, तो दूसरी ओर कथा की सरसता। दिनकर जी की संवेदना, भावबोध और काव्य-संस्कार का सजीव उदाहरण, इस निबंध में दिखलाई देता है। इस निबंध के महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार से हैं :-

* आदिमानव का इतिहास और अर्द्धनारीश्वर का स्वरूप
* आज के समय में नारी के प्रति हमारी सोच, समाज की सोच
* बौद्ध-धर्म तथा जैन धर्म में नारी के प्रति विचार
* साहित्यकारों के द्वारा स्त्री (नारी) का चित्रण
* अर्द्धनारीश्वर का एक-दूसरे का पूरक

नर-नारी एक-दूसरे के पूरक हैं। आपस में धूप-चाँदनी का बँटवारा नहीं करते थे। वे एक-दूसरे पर अवलंबित नहीं था। अर्द्धनारीश्वर शिव-पार्वती का काल्पनिक रूप है, जिसका आधा अंग पुरुष और आधा स्त्री का होता है। एक ही मूर्ति की दो आँखें, एक समयी और दूसरी विकराल, एक ही मूर्ति के दो हाथ; एक में त्रिशूल, तो दूसरी में चूड़िया, एक ही मूर्ति के दो पाँव एक में बाघंबर लिपटा हुआ तो दूसरी में साड़ी का आवृत्त। यह

परिकल्पना शिव-पार्वती के, स्त्री-पुरुष के आपसी समन्वय का चित्रण बनता है।

आगे जाकर इस निबंध में इस कल्पना से यह संदेश प्रसारित होता है कि स्त्री-पुरुष समान हैं। एक का गुण दूसरे का अवगुण नहीं हो सकता है। परंतु आज नर-नारी पूरकता का यह रूप समाज में नहीं दिखता है। आज स्त्री और पुरुष के बीच विभाजन सा हो गया है। दोनों एक-दूसरे के साथ खड़े होने के बजाए परस्पर विरोधी बन गए हैं। आज के समाज में अर्द्धनारीश्वर का यह रूप नहीं दिखाई देता है।

आदिमानव के समय नर-नारी विभेद नहीं था। दोनों साथ शिकार पर जाते थे। इनदोनों में बलिष्ठता एवं दुर्बलता का भी प्रश्न नहीं था। आखेट करने के लिए वे स्वतंत्र थे और एक-दूसरे पर निर्भर भी नहीं थे।

जब कृषि का आविष्कार हुआ, तब स्त्रीजाति बंधन की दुर्बलताओं में घिरने लगी।

जारी है.....